

३. नाखून क्यों बढ़ते हैं ?

- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

परिचय

जन्म : १९०७, बलिया (उ.प्र.)

मृत्यु : १९८९ (उ.प्र.)

परिचय : द्विवेदी जी हिंदी साहित्य के मौलिक निबंधकार, उत्कृष्ट समालोचक एवं सांस्कृतिक विचारधारा के प्रमुख उपन्यासकार हैं। आपका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और आपका स्वभाव बड़ा सरल और उदार था। आप हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और बांग्ला भाषाओं के विद्वान थे।

प्रमुख कृतियाँ : 'अशोक के फूल', 'कल्पलता' (निबंध), 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा' (उपन्यास) आदि।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत वैचारिक निबंध में आचार्य हजारीप्रसाद ने नाखून बढ़ने को पशुता का चिह्न माना है। नाखून पशुता, बुराइयों का प्रतीक है। आपका कहना है कि जिस तरह नाखून बढ़ने पर हम उसे काट देते हैं, ठीक उसी तरह यदि किसी में बुरी आदतें आ जाएँ तो उन्हें त्याग देना चाहिए।

मौलिक सृजन

सद्गुणों और दुर्गुणों में अंतर लिखो।

बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं। अल्पज्ञ पिता बड़ा दयनीय जीव होता है। मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ लिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं कुछ सोच ही नहीं सका। हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं। काट दीजिए, वे चुपचाप दंड स्वीकर कर लेंगे; पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति छूटते ही फिर जैसे के तैसे हो जाते हैं। आखिर ये इतने बेहया क्यों हैं ?

कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था; वनमानुष जैसा। उसे नाखून की जरूरत थी। उसकी जीवन रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दाँत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा। उसने हड्डियों के भी हथियार बनाए। मनुष्य धीरे-धीरे और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाए। इतिहास आगे बढ़ा। कभी-कभी मैं हैरान होकर सोचता हूँ कि मनुष्य आज अपने बच्चों को नाखून न काटने पर डाँटता है। वे रोज बढ़ते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। ये उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती।

अगर आदमी अपने शरीर की, मन की और वाक की अनायास घटने वाली वृत्तियों के विषय में विचार करे तो उसे अपनी वास्तविक प्रवृत्ति पहचानने में बहुत सहायता मिले। मनुष्य की नख बढ़ा लेने की जो सहजात वृत्ति है, वह उसके पशुत्व का प्रमाण है। उन्हें काटने की जो प्रवृत्ति है, वह उसकी मनुष्यता की निशानी है।

मेरा मन पूछता है- मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है ? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर ? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर ? मेरी निर्बोध बालिका ने मानो मनुष्य जाति से ही प्रश्न किया है- जानते हो, नाखून क्यों बढ़ते हैं ? यह हमारी पशुता के अवशेष हैं। मैं भी पूछता हूँ-जानते हो, ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं ? ये हमारी पशुता की निशानी हैं। स्वराज होने के बाद स्वभावतः ही हमारे नेता और विचारशील नागरिक सोचने लगे हैं कि इस देश को सच्चे अर्थ में

सुखी कैसे बनाया जाए । हमारी परंपरा महिमामयी और संस्कार उज्ज्वल हैं क्योंकि अपने आप पर, अपने आप द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बहुत बड़ी विशेषता है ।

मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है ! उसमें संयम है, दूसरे के सुख-दुख के प्रति समवेदना है, श्रद्धा है, तप है, त्याग है । इसीलिए मनुष्य झगड़े-टंटे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है । वचन, मन एवं शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत मानता है ।

ऐसा कोई दिन आ सकता है जब मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा । प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़



जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है । उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी । शायद उस दिन वह मरणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा । नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है ।

मनुष्य में जो घृणा है जो अनायास बिना सिखाए आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है । अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है । बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं ।

मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए निःशेष भाव से दे देने में है । नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है । उसको काट देना उस स्वनिर्धारित आत्मबंधन का फल है जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है ।

नाखून बढ़ते हैं तो बढ़ें, मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा ।

— o —

श्रवणीय



मानवीय मूल्य वाले शब्दों का चार्ट बनाओ । इन शब्दों में से किसी एक शब्द से संबंधित कोई प्रसंग/घटना सुनो और सुनाओ ।



संभाषणीय

विविध संवेदनशील मुद्दों/विषयों (जैसे-जाति, धर्म, रंग, लिंग, रीति-रिवाज) के बारे में अपने शिक्षक से प्रश्न पूछो ।

लेखनीय



‘सुरक्षा हेतु शस्त्रों की भरमार’ विषय के पक्ष-विपक्ष में अपने विचार लिखो ।



पठनीय

पाठ्यसामग्री और अन्य पठन सामग्री का द्रुत वाचन करके उनमें आए विचारों पर सहपाठियों से चर्चा करो ।

शब्द वाटिका

वनमानुष = बंदर की एक प्रजाति
पाशवी = पशुवत
निर्बोध = अज्ञान
आचरण = बर्ताव, व्यवहार

लुप्त = गायब
घृणा = नफरत
द्योतक = प्रतीक
चरितार्थता = सार्थकता

* सूचनानुसार कृतियाँ करो :-

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

मनुष्य में पशुत्व से भिन्नता दर्शाने वाली बातें

↓

↓

↓

↓

(२) प्रतीक लिखो :

नाखूनों को बढ़ाना	नाखूनों को काटना
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

(३) उत्तर लिखो :

१. मनुष्य की चरितार्थता इन दो बातों में है :-

(अ) ----- (आ) -----

२. मनुष्य का स्वधर्म यह है :

(अ) ----- (आ) -----

३. मनुष्य को नाखूनों की जरूरत तब थी :

(अ) ----- (आ) -----



भाषा बिंदु

(१) निम्न शब्दों के लिंग पहचानकर लिखो -

आत्मा, व्यक्ति, बादल, तार, नोट, नाखून, पुस्तक, तकिया, दही

(२) अर्थ के अनुसार वाक्यों के प्रकार ढूँढ़कर लिखो ।



उपयोजित लेखन

किसी मौलिक मराठी विज्ञापन का हिंदी में अनुवाद करो ।



मैंने समझा



स्वयं अध्ययन

शरीर के विभिन्न अंगों से संबंधित मुहावरों की अर्थ सहित सूची बनाओ ।



IPEILP